नवरात्रि आर्थात नारी कर्तव्य का यादगार पर्व

ब्रह्मा कुमार :- भगवान भाई शांतिवन, माउंट आबू

भारत में अनेकाअनेक त्यौहार मनाये जाते है। उसमें से नवरात्र एक अनोखा त्यौहार है। नवरात्र माना ही जब जब इस विश्व में अज्ञान अंधकार बढ़ता है ऐसे समय अनेक माता बहनों ने आवतार लेकर अनेक आसूरी शक्तियों का संहार किया इसका यह यादगार पर्व है। ऐसे संकटमयी समय में अनेक देवताओं को आसूरों से मुक्ति दिलाई थी।

वर्तमान समय भी फिर से ऐसे आसूरी शक्तियों के अर्थात 5 विकारों के अधीन हर मानव है। जब मनुष्य इन 5 विकारोंसे मुक्ति पायेगा तो वह देवमानव बन जायेगा । इसलिए आज भी नवरात्र के त्यौहार में नौ देवीयों का आव्हान इन आसूरों से छुड़ाने के लिए बड़े धूम धाम से करते है। लेकिन आज देखने में तो यह आ रहा है कि हरसाल नवरात्र मनाने केबाद भी हर मनुष्य इन आसूरों के (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार) अधिन दिन प्रति दिन जादा ही होता जा करते है दुसरी तरफ माता बहनों के तरफ दृष्टि वृत्ति विकारी रखते है। माता बहने भी देहभान में आकर अपने कर्तव्य को भूल कर खुद भी विकारों के, आसूरों के वशिभूत होता है। इस कारण आज सारे विश्व में दु:ख, आशांति, भ्रष्टाचार, पापाचार बढ़ता ही जा रहा है।

आज एक तरफ भक्ति मार्ग में माता बहनों का कितना गायन पूजन होता है। जैसे दूर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, अम्बीका आदि । दूसरी और आज नारी को नर्क का द्वार, अबला । सचमुच यह कितनी आश्चर्य की और दु:ख की बात है। आज नारी अपने शक्तियों को, गुणों को, कर्तव्य को, कलाओं को, सन्मान को भूलकर स्वयं भी इन 5 विकारों के वशिभूत हो गई है। जिस कारण आज नारी को नर्क का द्वार, अबला कहा जाता है। अगर यही नारी अपने अंतर आत्मा को पहचानेगी, 5 विकारों का त्याग करेगी तो क्या मजाल है किसी की जो बुरी दृष्टि उस पर ड़ाले। ऐसे नारी पर न कोई आसूर वार करेगा बल्कि आसूर का संहार करने वाली बन जायेगी। जब नारी स्वयं को जागृत करेगी तो यही नारी अबला के बजाय सर्व का भला करनेवाली बन जायेगी। नर्क के द्वार के बजाए स्वर्ग का द्वार खोलने वाली बन जायेगी । तो हे नरियों उठो सारी दुनिय आपके कर्तव्य के लिए पुकार रही है। सारी दुनिया को अब

इन आसूरों से बचाव करो । आप 2/3 बच्चे की मॉ नही हो बाल्कि सारी विश्व की मॉ हो। आप तो शिवमय शक्ति हो। इन 5 विकारों के क्षणिक सुखो से बहते हुए विश्व को बचाओ । यही नवरात्री का त्यौहार आपको बार बार याद दिलाने आता है।

नारीयों में अनेक गुण, कलाये, भावनाये विशेषताये होती है। दुर्गा माता के चित्रा में उसको हाथ में भिन्न भिन्न चिजे देकर स्पष्ट किया है। जैसे एक हाथ में कमल पुष्प दिखाते है। कमल पुष्प समान न्यारा, प्यारा, पवित्र जीवन जीने की कला का यह प्रतिक है। दुसरे हाथ में स्वदर्शन चक्र दिखाते है:- स्वयं के बारे चिंतन करने की कला का यह प्रतिक है। तीसरे हाथ में तलवार दिखाने है:- मायावी शक्ति केबंधन को काटने मधुर वाणी द्वारा सर्व का कल्याण करने का यह प्रतिक है। पॉचवे हाथ में बाण दिखाते है:-ज्ञान बाण द्वारा आसूरों का संहार करने का यह प्रतिक है। छटवे हाथ में त्रिशूल दिखाने है:- यह भीमायावी शक्ति को संहार करने का प्रतिक है। सातवा हाथ वरदानी दिखाते है सर्व को शक्तियों का दान देना का यह प्रतिक है। आठवे हाथ में गदा दिखाते है:- आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा आसूरी शक्तियों पर जीत पाने का यह प्रतिक है। अगर वर्तमान समय भी हर नारी इन चीजों को धारण करेगी तो एक एक नारी दूर्गा, काली बनकर कुछ समय में ही इस विश्व में जो आसूरी शक्ति फैली हुई है उनका संहार कर विश्व को स्वर्ग बना सकेगी। हर मानव को दानव से देवना बना सकेगी । फिर ऐसी नारीयों का फिर से भारत माता के रुप में गायन हो जायेगा।

वास्तव में हर नारी पुजनीय वंदनीय और अपार शक्ति से युक्त है। वह इस विश्व में फैली हुई आसूरी शक्तियों का संहार कर सकती है। लेकीन आज देखा जाय तो नारी अपनी शक्ति, कर्तव्य, और विशेषताओं को भुलकर इस दुनिया की मायावी आकर्षण में आकर, चमक धमक के आकर्षण में आकर, देहभान के आकर्षण में आकर यह सब शक्तियॉ खों बैठी है। अपनी कर्त्तव्य को भूल चुकी है। जब ऐसी नारीयॉ जो मायावी आकर्षण में आकर सजना, धजना, फैशन आदि के वश होकर लोकलाज, कुल मर्यादाऍ, ईश्वरीय नियम मर्यादाओं का उलंघन कर लेती है। तब वह आसूरों का संहार करने के बजाय स्वयं ही आसूरी वृत्ती की बन जाती है। शक्ति के बजाय शक्ति हीन बन जाती है। फिर ऐसी नारीयॉ विश्व को आसूरों से अचाने के बजाय स्वयं की ही रक्षा कर नही सकती । अगर नारी अपना ऐसा व्यवहार करेगी तो आगे चलकर उसे स्वयं का बचाव करना, बहुत ही कठिण हो जायेगा। इसलिए कम से कम स्वयं का बचाव करने के लिए इन 5 आसूरी शक्तियों का आप खुद दिल से त्याग दे उसका संहार करे। (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) तब ही आनेवाले नाजूक समय में आप इज्जत से जी सकेंगे। अगर आप इन आसूरी शक्तियों का संहार करेगी तब

प्रकृति भी आपको सहयोग देगी । कोई भी परीस्थति में स्वयं भगवान आपके रक्षा के लिए उतर आयेगा। किसी की भी मजाल जो आपको टच भी करे । इसलिए स्वयं आपकी हिम्मत हो । इसके लिए पहले आपको ईश्वरीय मर्यादाओं पर चलना होगा । इन आसूरी शक्तियों के उपर विजय पाना होगा । तब आप विश्व के आगे शक्तिरुप नजर आयेगा तब ही आपका नाम सिंहवाहिनी सिद्ध होगा। यही कर्तव्य अब नवरात्रि का त्यौहार याद देने आता है।
ऐसी नारीयों को जागृत कर फिर से इस विश्व में फैली हुई आसूरी वृत्ति का संहार कराने हे तू स्वयं करमपिता शिव परमात्मा माता बहनों को ज्ञान का कलश दे रहे है। इस ज्ञान और योग द्वारा अपने अंदर जो 5 विकार है उसका संहार सहज ही गृहस्थ व्यवहार में रहते भी किया जा सकता है। जब आप अपने अंदर की आसूरी वृत्तियों का संहार करेगी तो स्वयं के साथ विश्व का बचाव भी सहज ही कर सकेगी । अब स्वयं परमपिता परमात्मा रचिता प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में स्वयं परमात्मा आप शिवमय शक्तियों का आव्हान कर रहे है। जागो उठो अपने कर्त्तव्य को पहचानों। आपके अंदर जो महान शक्तियॉ, कलाये, गुण, विशेषताये है उसे इस परमात्म ज्ञान द्वारा जागृत करो। इस ज्ञान योग द्वारा ही आप स्वयं के जीवन में, विश्व में आध्यात्मिक क्रांति द्वारा आसूरों का संहार कर सकेगी। नवरात्री का त्यौहार बार बार आपको यही याद दिलाता है कि आदि दिया था। अंत अब फिर से आप अपने कर्त्तव्य को पहचानो, आसूरी शक्तियों का सहांर करो यही याद दिलाता है नवरात्रि का महान पर्व।

ओम् शांति

———————————————————————